

## इकाई-1

**प्रश्न 1. किसी की आकांक्षाओं को पूरा करने में मूल्य शिक्षा कैसे मदद करती है?**

**उत्तर—**औपचारिक व अनौपचारिक रूप से वह 'चरित्र उन्मुख शिक्षा' जो किसी के मानस में बुनियादी मूल्यों और

जातीय मूल्यों को पैदा करती है, उसे मूल्य आधारित शिक्षा कहा जाता है। वह विषय जो हमें मानवीय सुख के लिए 'क्या मूल्यवान है' समझने में सक्षम बनाता है, मूल्य शिक्षा कहलाता है। एक बार, कोई व्यक्ति जीवन में अपने मूल्यों को समझ लेता है तो वह अपने जीवन में विभिन्न विकल्पों की जाँच स्वयं कर सकता है। मूल्य शिक्षा हमें अपनी आवश्यकताओं को समझने और हमारे लक्ष्यों को सही ढंग से देखने में सक्षम बनाती है और हमारे भ्रमों और विरोधाभासों को दूर करने और सभी स्तरों पर सद्भाव लाने में मदद करती है। यह हमारे भ्रमों और विरोधाभासों को दूर करने में भी मदद करती है और हमें तकनीकी नवाचारों का सही उपयोग करने में सक्षम बनाती है।

मूल्य हमारे सभी विचारों, व्यवहारों और कार्यों के लिए आधार बनाते हैं। एक बार जब हम जानते हैं कि हमारे लिए क्या मूल्यवान है, तो ये मूल्य हमारे कार्यों के लिए आधार बन जाते हैं। हमें विभिन्न मानवीय मूल्यों की सार्वभौमिकता को भी समझने की आवश्यकता है, क्योंकि तभी हमारे पास मूल्य शिक्षा के लिए एक निश्चित और सामान्य कार्यक्रम हो सकता है। तभी हम एक खुशहाल और सामंजस्यपूर्ण मानव समाज का आश्वासन दे सकते हैं।

**प्रश्न 2. मूल्य शिक्षा के लिए बुनियादी दिशा-निर्देश क्या हैं?**

**उत्तर—**वह विषय जो हमें मानवीय सुख के लिए 'क्या मूल्यवान है' समझने में सक्षम बनाता है, मूल्य शिक्षा कहलाता है। मूल्य शिक्षा में किसी भी पाठ्यक्रम की सामग्री के लिए निम्नलिखित दिशानिर्देश महत्वपूर्ण हैं—

**सार्वभौमिक—**यह प्रत्येक समय और क्षेत्रों के लिए जाति, पंथ, राष्ट्रीयताओं, धर्म आदि के बावजूद सभी मनुष्यों पर लागू होनी चाहिए।

**तर्कसंगत—**इसे मानवीय तर्क के लिए अपील करने में सक्षम होना चाहिए। यह किसी अंध-विश्वास पर आधारित नहीं होनी चाहिए।

**प्राकृतिक और पुष्टि—**यह स्वाभाविक रूप से मानव के लिए स्वीकार्य होना चाहिए। जो पाठ्यक्रम से गुजरता है और जब हम ऐसे मूल्यों के आधार पर जीते हैं तो यह हमारी खुशी की ओर जाता है। इसके अनुभवात्मक रूप से सत्य पर आधारित होने की आवश्यकता है, और न कि विश्वासों या मान्यताओं पर आधारित होने की।

**सभी को शामिल करना—**मूल्य शिक्षा का उद्देश्य हमारी चेतना और जीवन को बदलना है। इसलिए, मानव जीवन और पेशे के सभी आयामों (विचार, व्यवहार, कार्य और प्राप्ति) और स्तरों (व्यक्ति, परिवार, समाज, प्रकृति और अस्तित्व) को शामिल करने की आवश्यकता है।

**सामंजस्य के लिए अग्रणी—**मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम को अंततः व्यक्ति के भीतर, प्रकृति के साथ और प्रकृति के बीच सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए लक्षित होना चाहिए।

**प्रश्न 3. आज के परिदृश्य में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता किस लिये है?**

**उत्तर—**वह विषय जो हमें मानवीय सुख के लिए 'क्या मूल्यवान है' को समझने में सक्षम बनाता है, मूल्य शिक्षा कहलाता है। मूल्य शिक्षा निम्न को समझने हेतु आवश्यक है—



## हमारी आकांक्षाओं की सही पहचान

मूल्य शिक्षा हमें हमारी जरूरतों को समझने और हमारे लक्ष्यों को सही ढंग से देखने में सक्षम बनाता है और उनकी पूर्ति के लिए दिशा का संकेत भी देता है। यह हमारे भ्रमों और विरोधाभासों को दूर करने और सभी स्तरों पर सद्भाव लाने में भी मदद करता है जिससे हम अपनी सही आकांक्षाओं को पहचान सकते हैं।

## निरंतरता में हमारी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को समझाना

मूल्य हमारे सभी विचारों, व्यवहारों और कार्यों के लिए आधार बनाते हैं। एक बार जब हम जानते हैं कि हमारे लिए क्या मूल्यवान है, तो ये मूल्य हमारे कार्यों के लिए आधार बन जाते हैं। यह हमें मानवीय मूल्यों की सार्वभौमिकता को भी समझने में मदद करता है, क्योंकि तभी हमारे पास मूल्य शिक्षा के लिए एक निश्चित और सामान्य कार्यक्रम हो सकता है। तभी हम एक खुशहाल और सामंजस्यपूर्ण मानव समाज के निर्माण में सहयोग कर सकते हैं।

**मूल्यों और कौशलों की पूरकता को समझना**—हमारी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए मूल्य और कौशल दोनों आवश्यक हैं। जब हम सही लक्ष्यों की पहचान करते हैं और सही दिशा में उत्पादित होते हैं। इसे ज्ञान के क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, और जब हम सीखते हैं और इस प्रयास को वास्तविक बनाने के लिए अभ्यास करते हैं, तो यह मानव प्रयास (संघर्ष) के विभिन्न आयामों में वास्तविक जीवन में होने वाली तकनीकों को विकसित करने के लिए होता है। इसे कौशल के क्षेत्र के रूप में जाना जाता है।

इसलिए, किसी भी मानवीय प्रयास की सफलता के लिए मूल्यों और कौशल के बीच एक आवश्यक पूरकता होना जरूरी है। उदाहरण के लिए, मैं एक स्वस्थ जीवन जीना चाहता हूँ। केवल अच्छे स्वास्थ्य की कामना करने से मुझे अपने शरीर को फिट और स्वस्थ रखने में मदद नहीं मिलेगी और स्वास्थ्य का अर्थ समझे बिना, मैं अपने शरीर को फिट और स्वस्थ रखने के लिए चीजों को चयन सही ढंग से नहीं कर पाऊंगा।

**हमारी मान्यताओं का मूल्यांकन**—हम में से हर कोई कुछ चीजों में विश्वास करता है और हम इन मान्यताओं के आधार पर अपने मूल्यों को आधार बनाते हैं, वे झूठे या सच्चे होते हैं जो वास्तविकता में सही हो सकते हैं या नहीं भी। ये विश्वास अलग-अलग तरीकों से हमारे पास आते हैं जैसे—हम क्या पढ़ते हैं, देखते हैं, सुनते हैं, हमारे माता-पिता हमसे क्या कहते हैं, हमारे दोस्त इस बारे में बात करते हैं, पत्रिकाएँ किस बारे में बात करती हैं, हम टीवी आदि में क्या देखते हैं आदि। मूल्य शिक्षा हमें अपनी मान्यताओं और मान्य मूल्यों का मूल्यांकन करने में मदद करती है।

**प्रौद्योगिकी में मानवीय मूल्य को समझने हेतु**—वर्तमान शिक्षा प्रणाली काफी हद तक कौशल आधारित हो गई है। मुख्य जोर विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर है। हालांकि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी केवल उसी चीज को प्राप्त करने में मदद कर सकती है जिसे मूल्यवान माना जाता है। यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमें 'मूल्यवान क्या है', यह तय करने की क्षमता प्रदान नहीं करती। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा एक महत्वपूर्ण गायब कड़ी है। इस कमी के कारण, हमारे अधिकांश प्रयास व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय स्तर पर प्रतिकूल और गंभीर संकट साबित हो सकते हैं। इसे समझने के लिये मूल्य शिक्षा का होना अति आवश्यक है।

## प्रश्न 4. उदाहरण सहित बताइये कि उत्पादन कौशल मानवीय मूल्य एक-दूसरे के पूरक कैसे हैं?

**उत्तर**—मूल्यों का अर्थ है महत्व या भागीदारी और कौशल का अर्थ गुणों, प्रशिक्षण और क्षमताओं से है। हमारी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए मूल्य और कौशल दोनों आवश्यक हैं। जब हम सही लक्ष्यों की पहचान करते हैं और सही दिशा में उत्पादित होते हैं। इसे मूल्य डोमेन, ज्ञान के क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। मुख्य रूप से हमें पता होना चाहिए कि वास्तव में मानव खुशी, सभी को और सभी समय के लिए खुशी प्राप्त करने के लिए क्या उपयोगी है। और जब हम मानव प्रयास (संघर्ष) के विभिन्न आयामों में वास्तविक जीवन में ऐसा करने के लिए तकनीकों को विकसित करने के लिए इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सीखते हैं और अभ्यास करते हैं तब इसे कौशल के क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। इसलिए, किसी भी मानवीय प्रयास की सफलता के लिए मूल्यों और कौशल के बीच एक आवश्यकता पूरक है। उदाहरण के लिए, मैं एक स्वस्थ जीवन जीना चाहता हूँ। केवल अच्छे स्वास्थ्य की कामना करने से मुझे अपने शरीर को फिट और स्वस्थ रखने में मदद नहीं मिलेगी और स्वास्थ्य का अर्थ समझे बिना, मैं अपने शरीर को फिट और स्वस्थ रखने के लिए चीजों का चयन सही ढंग से नहीं



कर पाऊंगा। इसलिए मुझे अच्छे स्वास्थ्य के लक्ष्य को हासिल करने के लिए कौशल सीखना होगा, जिसका उपभोग करना होगा, जिसे तैयार किया जाना चाहिए। इसलिए अच्छे स्वास्थ्य का अर्थ जाने बिना, स्वास्थ्य प्राप्त नहीं किया जा सकता है और लक्ष्य के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लक्ष्य का उपयोग करना भी आवश्यक है।

**प्रश्न 5. आत्म-अन्वेषण को परिभाषित करें। स्व-अन्वेषण की सामग्री क्या है?**

**उत्तर—**आत्म-अन्वेषण यह पता लगाने की प्रक्रिया है कि मेरे भीतर क्या है? मेरे लिए क्या मूल्यवान है? मेरे लिए क्या सही है? आत्म-अन्वेषण के माध्यम से हमें स्वयं का मूल्य प्राप्त होता है। क्योंकि हम सम्पूर्णता (परिवार, दोस्त, हवा, मिट्टी, पानी, पेड़ आदि) के साथ रहते हैं और हम इन सभी के साथ अपने संबंधों को समझना चाहते हैं। इसके लिए हमें अंदर का अवलोकन शुरू करना होगा। आत्म-अन्वेषण का मुख्य ध्यान स्वयं मनुष्य है। स्व-अन्वेषण की सामग्री सभी मनुष्यों को इन्हीं मूलभूत सवालों के जवाब खोजने में मदद करती है।

**1. इच्छा/लक्ष्य—**मेरी (मानव) इच्छा/लक्ष्य क्या है? मैं वास्तव में जीवन में क्या चाहता हूँ?

**2. कार्यक्रम—**इच्छा को पूरा करने के लिए मेरा (मानव) कार्यक्रम क्या होना चाहिए। इसे कैसे पूरा करें?

संक्षेप में, उपरोक्त दो प्रश्न मानव आकांक्षाओं और मानव के पूरे क्षेत्र में कार्य करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार, वे स्व-अन्वेषण की सामग्री बनाते हैं।

**प्रश्न 6. आत्म-अन्वेषण 'आप क्या हैं' और 'आप वास्तव में क्या बनना चाहते हैं' के बीच संवाद की एक प्रक्रिया है। स्पष्ट करें।**

**उत्तर—**आत्म-अन्वेषण यह पता लगाने की प्रक्रिया है कि मेरे भीतर क्या है, मेरे लिए क्या मूल्यवान है, मेरे लिए क्या सही है? आत्म-अन्वेषण के माध्यम से हमें स्वयं का मूल्य प्राप्त होता है। यह अपने आप पर ध्यान केन्द्रित करने की एक प्रक्रिया है, कि हमारी वर्तमान मान्यताएँ और आकांक्षाएँ क्या हैं तथा हम वास्तव में जो बनना चाहते हैं (जो स्वाभाविक रूप से हमारे लिए स्वीकार्य है) अगर ये दोनों एक ही हैं, तो कोई समस्या नहीं है। यदि जाँच में हम पाते हैं कि ये दोनों एक समान नहीं हैं, तो इसका मतलब है कि हम इस विरोधाभास के साथ जी रहे हैं (हम वास्तव में जो बनना चाहते हैं वह नहीं है) और इसलिए, हमें इस विरोधाभास को अपने भीतर सुलझाने की जरूरत है। यह खोज की एक प्रक्रिया है कि सभी मनुष्यों में सहज, अपरिवर्तनीय और सार्वभौमिक है। यह हमारे भीतर के भ्रमों और अंतर्विरोधों को देखने और हमारी प्राकृतिक स्वीकृति के बारे में जागरूक होकर उन्हें हल करने में सक्षम बनाता है।

**प्रश्न 7. स्वाभाविक स्वीकृति का क्या अर्थ है? क्या यह सहज, अपरिवर्तनशील और सार्वभौमिक है? हम अपनी प्राकृतिक स्वीकृति के आधार पर प्रस्तावों को कैसे सत्यापित कर सकते हैं?**

**उत्तर—**प्राकृतिक स्वीकृति का तात्पर्य स्वयं अन्य मनुष्यों और प्रकृति की कुल स्वीकृति से है। एक बार जब हम प्राकृतिक स्वीकृति के आधार पर पूरी तरह से और वास्तव में अपने आप को प्रतिबद्ध करते हैं, तो हम आंतरिक सद्भाव, शांति और पूर्णता की समग्र भावना महसूस करते हैं। वास्तव में प्राकृतिक स्वीकृति अच्छी चीजों को स्वाभाविक रूप से स्वीकार करने का तरीका है। हम नीचे उल्लिखित प्राकृतिक स्वीकृति की विशेषताओं के आधार पर प्रस्तावों को आसानी से सत्यापित कर सकते हैं—

**(a) प्राकृतिक स्वीकृति समय के साथ नहीं बदलती।** यह समय के साथ अपरिवर्तित रहती है। उदाहरण के लिए प्यार, विश्वास, सम्मान आदि के लिए हमारी स्वाभाविक स्वीकृति उम्र के साथ नहीं बदलती।

**(b) यह जगह पर निर्भर नहीं करता है।** हमारे लिये जो मूल्यवान है या जो मूल्य है वह कभी भी नहीं बदलता, भले ही हम एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाएँ।

**(c) यह हमारी मान्यताओं या अतीत की स्थितियों पर निर्भर नहीं करता है।** कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारी धारणा या पूर्व धारणाएँ कितनी गहरी हैं। जब हम खुद से ईमानदारी से सवाल पूछते हैं, तो जवाब हमेशा एक ही होता है।

**(d) प्राकृतिक स्वीकृति सहज है।** प्राकृतिक स्वीकृति हमेशा होती है तथा यह हमेशा हमारे भीतर है। हम जो कुछ भी करते हैं, यह हमें बता रही है कि क्या सही है।



(e) प्राकृतिक स्वीकृति हम सभी के लिए समान है : यह हर इंसान का अभिन्न हिस्सा है। हालांकि हम में से हर एक के पास अलग-अलग पसंद और नापसंद और जीने और प्रतिक्रिया करने के साधन आदि हो सकते हैं, लेकिन अगर हम अपने दिमाग में अपने काम, व्यवहार, प्रयासों आदि का उद्देश्य सामान्य लक्ष्यों पर आधारित करते हैं तो हमें खुश रहने की जरूरत है। सम्मान पाने की, समृद्धि पाने की जरूरत है। इसलिए हमारी बुनियादी स्वीकृति वही रहती है।

**प्रश्न 8. समृद्धि का अर्थ क्या है? आप कैसे कह सकते हैं कि आप समृद्ध हैं?**

**उत्तर—**आवश्यक भौतिक सुविधाओं से अधिक होने या उपलब्ध होने की भावना समृद्धि है। हममें से लगभग सभी को लगता है कि अकेले धन का मतलब समृद्धि है। और हम भौतिक सुविधाओं के संचय और उपभोग को बढ़ाकर सुख और समृद्धि प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। यह पारिस्थितिक-विरोधी और जनविरोधी हो रहा है, जो मानव अस्तित्व के लिए खतरा है। समृद्धि के लिए दो चीजों की आवश्यकता होती है—

(i) भौतिक सुविधाओं की आवश्यक मात्रा की पहचान, और

(ii) आवश्यकता से अधिक भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता/उत्पादन सुनिश्चित करना।

हम समृद्ध तभी हो सकते हैं जब भौतिक सुविधाओं की आवश्यकता की कोई सीमा हो। अगर कोई सीमा नहीं है तो समृद्धि की भावना को आश्वस्त नहीं किया जा सकता है।

दूसरे, सिर्फ जरूरत का आकलन करना ही काफी नहीं है। हमें आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने में सक्षम होना चाहिए।

**प्रश्न 9. समृद्धि और धन के बीच अंतर क्या है? हमारे लिए अधिक स्वीकार्य क्या है और क्यों?**

**उत्तर—**समृद्धि भौतिक सुविधाओं से अधिक होने की भावना है; ना कि यह केवल भौतिक सुविधाओं की मात्रा है। हममें से लगभग सभी को लगता है कि अकेले धन का मतलब समृद्धि है और इस घटना को इस तथ्यहीन या आधे तथ्य पर समझाने की कोशिश करते हैं। धन एक भौतिक वस्तु है। इसका मतलब है पैसा होना, या बहुत सारी भौतिक सुविधाएँ या दोनों होना। या एक बहुत महत्वपूर्ण अंतर है। हम ज्यादातर आज यह भेद करने में असफल रहते हैं। हम धन के लिए काम करते रहते हैं, बिना यह महसूस किए कि मूल इच्छा समृद्धि की भावना के लिए है, अर्थात् पर्याप्त होने की भावना है। समृद्धि हमारे लिए अधिक स्वीकार्य है क्योंकि धन समृद्धि का एक हिस्सा है। हम भौतिक सुविधाओं के संचय और उपभोग को बढ़ाकर सुख और समृद्धि प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। यह पारिस्थितिक-विरोधी और जनविरोधी हो रहा है, और मानव अस्तित्व के लिए खतरा है। उदाहरण के लिये अगर एक व्यक्ति के पास बहुत पैसा है, लेकिन इसे थोड़ा-सा भी साझा नहीं करना चाहता है तो वह व्यक्ति धनी तो है परन्तु वह समृद्ध नहीं है। उसके पास 'धन' है, लेकिन वह 'वंचित' महसूस करता है। यदि कोई समृद्ध महसूस करता है, तो वह अपने पास जो कुछ भी होता है, उसे साझा करता है, क्योंकि वह पर्याप्त धन से बहुत अधिक की भावना रखता है।

**प्रश्न 10. एक खुशहाल और समृद्ध जीवन की आपकी वर्तमान दृष्टि के क्या परिणाम हैं?**

**उत्तर—**हम भौतिक सुविधाओं के संचय और उपभोग को बढ़ाकर सुख और समृद्धि प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं जो मानव अस्तित्व के लिए खतरा है।

ऐसी प्रवृत्ति के कुछ परिणामों को नीचे संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है—

**व्यक्ति के स्तर पर :** अवसाद, मनोवैज्ञानिक विकार, आत्महत्या, तनाव, असुरक्षा, आदि की बढ़ती समस्याएँ।

**परिवार के स्तर पर :** संयुक्त परिवारों का टूटना, अविश्वास और पुरानी और युवा पीढ़ियों के बीच संघर्ष, रिश्ते में असुरक्षा, तलाक, दहेज प्रताड़ना आदि।

**समाज के स्तर पर :** आतंकवाद और नक्सलवाद की बढ़ती घटनाओं, बढ़ती सांप्रदायिकता, जातिवाद, जातीय संघर्ष, राष्ट्रों के बीच युद्ध आदि।

**प्रकृति के स्तर पर :** ग्लोबल वार्मिंग, जल, वायु, मिट्टी, ध्वनि प्रदूषण, खनिजों और खनिज तेलों के संसाधन में कमी आदि।



सभी समस्याएँ एक गलत समझ, सुख और समृद्धि और उनकी निरन्तरता के बारे में हमारी गलत धारणा का सीधा परिणाम हैं—यह गंभीर अन्वेषण का मुद्दा है।

**प्रश्न 11. SVDD, SSDD और SSSS के रूप में दिए गए संक्षिप्तीकरण क्या संकेत देते हैं?**

**उत्तर—**अपनी मूल आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए हमें सही समझ के लिए काम करने की जरूरत है जिस आधार पर हम रिश्ते और फिर भौतिक सुविधाओं के लिए काम कर सकते हैं परन्तु आज ऐसा नहीं हो रहा है। इसी आधार पर हम मनुष्यों को तीन श्रेणी में बाट सकते हैं, जैसे—

**(i) SVDD : ( साधन विहीन दुखी दरिद्र )—**इस श्रेणी में वे लोग आते हैं जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं तथा दुखी व दरिद्र होते हैं।

**SSDD : ( साधन सम्पन्न दुखी दरिद्र )—**इस श्रेणी में वे लोग आते हैं जो आर्थिक रूप से सही हैं, उनके पास धन है पर पर्याप्त होने की भावना के ना होने से वे दुखी और दरिद्र हैं अतः ये धनी परन्तु वंचित लोग हैं।

**SSSS : ( साधन सम्पन्न सुखी समृद्ध )—**इस श्रेणी में वे लोग आते हैं जो आर्थिक रूप से मजबूत होने के साथ-साथ पर्याप्त होने की भावना भी रखते हैं। अतः ये धनी व समृद्ध लोग हैं।

सं०	धन	समृद्ध होने की भावना	श्रेणी
1.	×	×	SVDD
2.	✓	×	SSDD
3.	✓	✓	SSSS

**प्रश्न 12. 'जानवरों के लिए भौतिक सुविधाएँ आवश्यक और पूर्ण हैं, जबकि वे मनुष्यों के लिए आवश्यक है लेकिन पूर्ण नहीं हैं।' टिप्पणी करें।**

**उत्तर—**जानवरों के लिए भौतिक सुविधाएँ आवश्यक और पूर्ण हैं, जबकि वे मनुष्यों के लिए पूर्ण आवश्यक है लेकिन पूर्ण नहीं हैं। इसे हम निम्न उदाहरण से सत्यापित कर सकते हैं—

**जानवरों के लिए—**जानवरों को जीवित रहने के लिए मुख्य रूप से अपने शरीर की देखभाल के लिए शारीरिक चीजों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए; भूख लगने पर गाय भोजन की तलाश करेगी। एक बार इसे घास या चारा मिल जाता है, इसे खाती है, इत्मीनान से चबाती है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि जब तक जानवरों के पास भौतिक चीजें हैं, वे काफी हद तक ठीक हैं, वे और अधिक की इच्छा नहीं रखते हैं।

**मनुष्य के लिए—**भौतिक सुविधाएँ मनुष्य के लिए आवश्यक हैं, लेकिन वे हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए स्वयं द्वारा पूर्ण नहीं हैं। हमारी जरूरतें सिर्फ भौतिक सुविधाओं से ज्यादा हैं। हम सभी की अन्य आवश्यकताएँ, अन्य योजनाएँ हैं, शायद हम किसी फिल्म में जाने या किताब पढ़ने, या कॉलेज जाने, या कुछ टीवी देखने या परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने के बारे में सोचते हैं... यह सूची अंतहीन है। इस प्रकार यह देखना आसान है कि जहाँ भौतिक सुविधाएँ हमारे लिए मनुष्य के लिए आवश्यक हैं, वहीं वे हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि जानवरों के लिए—“भौतिक सुविधाएँ आवश्यक और पूर्ण हैं।” मनुष्यों के लिए “भौतिक सुविधाएँ आवश्यक हैं लेकिन पूर्ण नहीं हैं।”

**प्रश्न 13. बुनियादी मानवीय आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए क्या आवश्यकताएँ हैं?**

**उत्तर—**हमारी मूल आकांक्षाएँ खुशी (पारस्परिक पूर्ति) और समृद्धि (पारस्परिक समृद्धि) हैं। अन्य मनुष्यों के साथ संबंधों द्वारा खुशी सुनिश्चित की जाती है और भौतिक सुविधाओं पर काम करके समृद्धि सुनिश्चित की जाती है। दोनों आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिये हमें तीन चीजों की आवश्यकता है—

**(i) सही समझ—**हमें हमारी बुद्धिमत्ता को सबसे प्रभावी ढंग से सीखने और उपयोग करने की आवश्यकता है।

**(ii) अच्छे संबंध—**एक व्यक्ति अपने जीवन में दूसरे से किस तरह व्यवहार करता है—घर पर, कार्यस्थल पर और समाज में उसी के आधार पर पारस्परिक सम्बन्धों को बनाता है।

(iii) **भौतिक सुविधाएँ**—इसमें व्यक्तियों की शारीरिक आवश्यकताएँ शामिल हैं और जीवन की सुख-सुविधाओं के साथ-साथ आवश्यकताएँ भी बताई गई हैं। मानवीय संबंधों में मुद्दों को हल करने के लिए, हमें उन्हें पहले समझने की जरूरत है, और यह 'रिश्ते की सही समझ' से आएगा। इसी तरह समृद्ध होने और प्रकृति को समृद्ध करने के लिए, हमें 'सह समझ' की आवश्यकता है। सही समझ हमें भौतिक सुविधाओं के लिए हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाती है और इसलिए धन और समृद्धि के बीच अंतर को सही ढंग से भेद सकती है और प्रकृति के साथ, हमें प्रकृति में सामंजस्य को समझने की आवश्यकता पर जोर देती है।

**प्रश्न 14. पशु चेतना और मानव चेतना से आपका क्या अभिप्राय है?**

**उत्तर**—सभी प्राथमिकताओं को केवल भौतिक सुविधाओं के लिए या पूरी तरह से भौतिक सुविधाओं के आधार पर जीने को 'पशु चेतना' कहा जा सकता है। तीनों (सही समझ, संबंध और शारीरिक सुविधाओं) के साथ रहने को 'मानव चेतना' कहा जाता है।

पशु के लिए, शारीरिक सुविधा आवश्यक है और साथ ही पूर्ण है— जबकि मनुष्य के लिए यह आवश्यक है लेकिन पूर्ण नहीं है।

केवल भौतिक सुविधाओं के लिए काम करना पशु चेतना के साथ रह रहा है।

संबंध और शारीरिक सुविधाओं के बाद पहली प्राथमिकता के रूप में सही समझ के लिए कार्य करना मानव चेतना है।

पशु चेतना से मानवीय चेतना में परिवर्तन की आवश्यकता है। इसे पहली प्राथमिकता के रूप में 'सही समझ' के लिए काम करके ही पूरा किया जा सकता है।

**प्रश्न 15. व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के स्तर पर आज कई समस्याएँ हैं। इनमें से कुछ समस्याओं की पहचान करें जिनसे मानव पीड़ित है।**

**उत्तर**—आज हम आम तौर पर भौतिक सुविधाओं के संचय और उपभोग को बढ़ाकर सुख और समृद्धि प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। यह प्रयास व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के स्तर पर आज कई समस्याओं को जन्म दे रहा है। ये समस्याएँ हैं—

**व्यक्ति के स्तर पर**—अवसाद, चिंता, आत्महत्या, तनाव, असुरक्षा, बढ़ती स्वास्थ्य समस्याएँ, आत्मविश्वास और विश्वास की कमी आदि की बढ़ती समस्याएँ।

**परिवार के स्तर पर**—संयुक्त परिवारों का टूटना, रिश्तों में अविश्वास और अनबन, तलाक, पीढ़ी की खाई, दहेज हत्या, बड़े लोगों की उपेक्षा आदि।

**समाज के स्तर पर**—आतंकवाद, हिंसा, सांप्रदायिकता, नस्लीय और जातीय संघर्ष, भ्रष्टाचार, मिलावट, यौन-अपराध, शोषण, राष्ट्रों के बीच युद्ध, घातक हथियारों के प्रसार आदि के बढ़ते झुकाव।

**प्रकृति के स्तर पर**—ग्लोबल वार्मिंग, मौसम में असंतुलन, खनिज और ऊर्जा संसाधनों की कमी, वनों की कटाई, मिट्टी का क्षरण आदि।